Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 7 ~ Issue 10 (2019) pp.: 62-64
ISSN(Online) : 2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

ऐतिहासिक भारत के उत्तरोत्तर आर्थिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ अमन चंद्र
मध्यकालीन इतिहास विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोंडा

सन्दर्भ
भौगोलिक एकता ने दे ा के प्रत्येक भाग के सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन को प्रभावित किया। महाजनपद काल तक आते–आते भारत में नये व्यवसायों का उदय, व्यापार एवं वाणिज्य की प्रगति, सिक्कों का प्रचलन, सूद एवं कर्ज की प्रथा, नगरों के उदय एवं नगरीय जीवन का विकास हुआ, जिससे भारत का आर्थिक विकास उत्तरोत्तर विकसित होता गया। वैदिक युग में लोगों की मुख्य आर्थिक गतिविधि कृषि थी, लेकिन दूसरी शहरीकरण के साथ उत्तर भारत में कई शहरी केंद्रों की वृद्धि हुई। इससे व्यापार और वाणिज्य के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन मिला। प्राचीन भारतीयों ने मध्य पूर्व, रोमन साम्राज्य और दक्षिण पूर्व एशिया जैसे दूर की भूमि के साथ व्यापारिक संपर्क किया था। कई भारतीय व्यापार कालोनियों अन्य देशों में बसे थे।

Received 20 Jan.2020; Accepted 05 Feb.., 2020 © The author(s) 2019.
Published with open access at www.questjournals.org

परिचय

भारत एक भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विविधताओं से परिपूर्ण दे ा है। इसकी मौलिक एकता बाहरी विभिन्नता में निहित है। सम्पूर्ण भारत (आधुनिक पकिस्तान एवं बांग्लादे ा सहित) प्राचीन काल से ही एक रा ट्र के रूप में स्वीकार किया गया है। प्राचीन साहित्यकारों कवियों तथा इतिहासकारो ने इसे एक ऐसे विस्तृत भौगोलिक इकाई के रूप में देखा है, जो हिमालय पर्वतमाला से लेकर समुद्र तक विस्तृत था। इस समूचे क्षेत्र पर भाासन करने वालों को चक्रवर्ती की उपाधि से विभूशित किया गया है। अ ाोक तथा समुद्रगुप्त जैसे पराक्रमी और भाक्ति ााली भाासकों ने सम्पूर्ण भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बांधे रखा।

अधिकांश भारतीय आबादी गांवों में रहती थी और गांवों की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर थी। कृषि आबादी का प्रमुख व्यवसाय था और एक गांव की खाद्य आवश्यकताएं संतुष्ट थीं। यह कपड़ा, खाद्य प्रसंस्करण और शिल्प जैसे उद्योगों के लिए कच्चे माल भी प्रदान करता है। किसानों के अलावा, लोगों के अन्य वर्गों में नदियां, सुतार, डॉक्टर, सुनार, बुनकर आदि शामिल थे। कस्बों और शहरी केंद्रों में व्यापार सिक्कों के माध्यम से हुआ, लेकिन गांवों में वस्तु विनिमय आर्थिक गतिविधियों की मुख्य व्यवस्था थी। जातियों और उप–जातियों की व्यवस्था ने श्रम का विभाजन सुनिश्चित किया और प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रदान करते हुए, मंडलियों की तरह कार्य किया। जाति व्यवस्था ने लोगों को व्यवसाय बदलने और ऊंची जाति की जीवन शैली के लिए इच्छुक बनाने से प्रतिबंधित किया। परंपरागत रूप से, संयुक्त परिवार व्यवस्था थी और एक परिवार के सदस्यों ने व्यापारिक उद्यमों में निवेश करने के लिए अपने संसाधनों को जमा किया।

ढाका के मलमल, बंगाल के कालिकों, कश्मीर के शाल, वस्त्र और हस्तशिल्प, मिर्च, दालचीनी, अफीम और इंडिगो जैसे कृषि उत्पादों को सोने, चांदी के बदले यूरोप, मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया को निर्यात किया गया। 16 वीं शताब्दी के व्यापार और वाणिज्य में यूरोपीय के आगमन के साथ पूरी तरह से बदल दिया गया था। यूरोपीय मुख्य रूप से मसाले, हस्तशिल्प, सूती कपड़े, इंडिगो आदि पर केंद्रित थे। सभी यूरोपीय शक्तियों में ब्रिटिश ने सबसे अधिक मजबूत साबित कर दिया और अपने प्रतियोगियों को भारत से बाहर कर दिया। धीरे–धीरे और धीरे–धीरे ब्रिटिशों ने राजनीतिक वर्चस्व हासिल किया और भारत पर कब्जा कर लिया और अपनी जरूरतों के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था को तोड़ दियाद्य भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ भारत से धन की निकासी शुरू हुई। अंग्रेजों ने जब भारत छोड़ दिया तो वहां खराब औद्योगिक बुनियादी ढांचा था।

आजादी के बाद, भारत ने योजनाबद्ध आर्थिक विकास का विकल्प चुना। प्रमुख चिंता का विषय था जोर और भारी उद्योगों को विकसित करना। इसके साथ तेजी से औद्योगीकरण शुरू हुआ। यहां, यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि हमारी आर्थिक नीतियां राज्य द्वारा सामाजिक रूप से उन्मुख और नियंत्रित थीं। भारत एक मिश्रित अर्थव्यवस्था पैटर्न का पालन करना शुरू कर दिया। लेकिन 1 9 70 के दशक के उत्तरार्ध में और 1990 की शुरुआत में, भारतीय नीति निर्माताओं ने महसूस किया कि राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था लगभग 45 वर्षों में वांछित परिणाम उत्पन्न करने में सक्षम नहीं थी। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण पर आधारित आर्थिक नीति का पीछा करने का निर्णय लिया गया। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में, भारत ने अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में तेजी से वृद्धि देखी है, भले ही भारत ने नई आर्थिक नीति का पालन करना शुरू किया हो, लेकिन इसके अच्छे परिणाम होने की संभावना थी।

भारत में मुगल साम्राज्य के समय यहाँ की धन संपदा से आकर्ि ात होकर अनेक यूरोपियन व्यापरिक कंपनियो ने यहाँ प्रवे ा किया जिनमें पुर्तगाली, डच, डेनि ा, फ्रेन्च तथा अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी आदि प्रमुख थी। कालान्तर में इन सभी विदे ाी कम्पनियों के संघ ार्ि का अन्त अंग्रेजो द्वारा भारतीय समुद्री व्यापार पर स्वामित्व हासिल करने और एक राजनीतिक भाक्ति के रूप में उभरने से हुआ। इस घटना के बाद भारत के साथ ब्रिटेन के आर्थिक सम्बन्धों का एक नया युग प्रारम्भ हुआ जिसमें भारत, औद्योगिक इंग्लैण्ड का एक उपनिवे ा बन गया। भारत पर राजनीतिक अधिकार के बाद अंग्रेजों ने भारत को अपना गुलाम दे ा बना लिया। भारत की सम्पत्ति और संसाधनो को अंग्रेज ब्रिटेन में भेज रहे थे और इसके बदले भारत को पर्याप्त आर्थिक लाभ नहीं मिल रहा था। यह आर्थिक दोहन ब्रिटि ा भाासन की खास व्यवस्था थी। दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक ''पावर्टी एण्ड अन–ब्रिटि ा रूल इन इंडिया'' में ब्रिटि ा भाासन की आर्थिक कुरीतियों का वर्णन किया है। दादा भाई ने धन की निकासी को ''अनिश्टो के अनिश्ट'' की संज्ञा दी।

भारत का आर्थिक विकास सिंधु घाटी सभ्यता से आरम्भ माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्यतः व्यापार पर आधारित प्रतीत होती है जो यातायात में प्रगति के आधार पर समझी जा सकती है। लगभग 600 ई०पू० महाजनपदों में विशेष रूप से चिह्नित सिक्कों को ढ़ालना आरम्भ कर दिया था। इस समय को गहन व्यापारिक गतिविधि एवं नगरीय विकास के रूप में चिह्नित किया जाता है। 300 ई०पू० से मौर्य काल ने भारतीय उपमहाद्वीप का एकीकरण किया। राजनीतिक एकीकरण और सैन्य सुरक्षा ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ, व्यापार एवं वाणिज्य से सामान्य आर्थिक प्रणाली को बढ़ाव मिल।

अगले 1500 वर्षों में भारत में राष्ट्रकूट, होयसल और पश्चिमी गंग जैसे प्रतिष्ठित सभ्यताओं का विकास हुआ। इस अवधि के दौरान भारत को प्राचीन एवं 17वीं सदी तक के मध्ययुगीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में आंकलित किया जाता है। इसमें विश्व के की कुल सम्पति का एक तिहाई से एक चौथाई भाग मराठा साम्राज्य के पास था, इसमें यूरोपीय उपनिवेशवाद के दौरान तेजी से गिरावट आयी।

आर्थिक इतिहासकार अंगस मैडीसन की पुस्तक द वर्ल्ड इकॉनमी ए मिलेनियल पर्स्पेक्टिव (विश्व अर्थव्यवस्था एक हजार वर्ष का परिप्रेक्ष्य) के अनुसार भारत विश्व का सबसे धनी देश था और 17वीं सदी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यस्था था।

भारत में इसके स्वतंत्र इतिहास में केंद्रीय नियोजन का अनुसरण किया गया है जिसमें सार्वजनिक स्वामित्व, विनियमन, लाल फीताशाही और व्यापार अवरोध विस्तृत रूप से शामिल है।1991 के आर्थिक संकट के बाद केन्द्र सरकार ने आर्थिक उदारीकरण की नीति आरम्भ कर दी। भारत आर्थिक पूंजीवाद को बढ़ावा देन लग गया और विश्व की तेजी से बढ़ती आर्थिक अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनकर उभरा।

भारत में चक्रवर्ती साम्राज्यों की स्थापना एवं इतिहास लेखन मौर्य काल से प्रारंभ हुआ। मौर्य सम्राट अ ोक मौर्य के ि ालालेखों को पहले लिखित ऐतिहासिक स्त्रोत के रूप में स्वीकार किया जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार मौर्य काल में व्यापार एवं वाणिज्य की प्रगति चरम पर थी, भारत में बन्दरगाहों की व्यवस्था थी। मेगस्थनीज के अनुसार मार्गो के निर्माण कार्य की व्यवस्था 'एग्रोनोमोई' नामक अधिकारी करता था। प ि चमी ए ि ाया और मिस्त्र, फारस की खाड़ी और सदन आदि से भारत का व्यापारिक सम्बन्ध था, चीन से भी व्यापार होता था। अर्थ ाास्त्र में चीनी रे ाम का उल्लेख किया गया है। विदे ाों का हाथी दाँत, मोती, रंग, नील, बहुमूल्य लकड़ियां, वस्त्र इत्यादि भेजे जाते थे। पुरातात्विक साक्ष्यों से अंतर्दे ाीय व्यापार का भी प्रमाण मिलता है। मौर्यकाल तक विकसित मुद्रा प्रणाली का भी प्रचलन हो चुका था। लक्षणाध्यक्ष, मुद्रा–व्यवस्था या राजकीय टकसाल का नियंत्रक था। मुद्रा के निर्माण एवं संचालन पर राज्य का एकाधिकार था, अर्थ ाास्त्र में भी विस्तृत मुद्रा प्रणाली की चर्चा की गयी है, विभिन्न प्रकार के सिक्कों, पण, स्वर्ण, क ार्षापण, मा ाक, कांकणी आदि का उल्लेख मिलता है। जो मुख्यतः चांदी, तांबे आदि धातुओं के होते थे। इस समय की दे ा की आर्थिक सम्पन्नता ने कला–कौ ाल एवं धार्मिक – ौक्षणिक विकास को भी प्रभावित किया।

मौर्य साम्रज्य (321 ई०पू०–184 ई०पू०) के बाद दूसरा चक्रवर्ती साम्राज्य गुप्त साम्राज्य (240 ई०पू०) था। आर्थिक दृश्टि से गुप्तकाल को भारत का स्वर्णयुग कहा जाता है। गुप्त राजाओं ने महाराजाधिराज परमभट्टारक इत्यादि। बड़ी–बड़ी साम्राज्यवादी उपाधियां ग्रहण कीं जो कि तत्कालीन सुदृढ भारतीय साम्राज्य को द ार्ाति हैं। इस समय भारत कृशि एवं व्यापार दोनो रूपों में आर्थिक रूप से समृद्ध था। तत्कालीन समय में गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कृ णा तथा कावेरी जैसी बड़ी नदियों के निचले पाट मुख्य जल–मार्ग थे। पूर्वी तट के बंदरगाह क्रम ाः ताम्रलिप्ति, घंट ाला और कदूरा आदि पूर्व ए ि ाया के साथ–साथ उत्तर–भारतीय व्यापार को संभालते थे तथा प ि चमी तट के बंदरगाहों यथा भडौच, चोल, कल्याण तथा कैब्रे आदि के माध्यम से भूमध्य सागर एवं प ि चम ए ि ाया के साथ व्यापार होता था।

प्रमुख विदे ाी व्यापार में मसालों, काली मिर्च, चंदन की लकड़ी, मोतियों, रत्नों, सुगन्धियों, नील और जड़ी–बूटियों का निर्यात पूर्ववत् होता रहा। भारतीय जलयान अब अरब–सागर, हिंद महासागर, तथा चीन सागर की नियमित यात्रा करने लगे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत में इस समय जहाजरानी तथा व्यापार में जीवंत रूचि उत्पन्न हो गयी थी।

गुप्तकाल में धातुओं के ज्ञान में भी बहुत उन्नति हुई थी। इस काल का सर्वाधिक भत्य अव ोश दिल्ली का सुप्रसिद्ध लौह–स्तम्भ है। जिसकी ऊँचाई तेइस फुट से कुछ अधिक है और जिसमें अब तक जंग नही लगा है, जो इस काल की वैज्ञानिक प्रगति का सर्वोत्कृश्ट उदाहरण है।

गुप्तकाल की आर्थिक–सम्पन्नता पर टिप्पणी करते हुए चीनी यात्री फाह्यान लिखता है, कि ''भारत के लोग सुखी व समृद्ध है।'' गुप्तकाल में भारत में स्वर्ण मुद्रा का अधिकां ा प्रचलन उसकी समृद्धता का प्रतीक है। कृशि, उद्योग एवं व्यापार उन्नत अवस्था में था। सिंचाई के लिए उचित प्रबन्ध किए गए थे, तथा किसानों पर भू–राजस्व का भार बहुत कम था। इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से स्पश्ट है, कि प्राचीन काल में भारत का आर्थिक विकास वि व में चरम पर था अतः इसी कारण से भारत को सोने की चिड़िया की संज्ञा प्रदान की गयी थी।

गुप्त वं ा के प चात् वर्धन वं ा के काल में भी भारत आर्थिक दृ ि ट से सम्पन्न था। विख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग, सम्राट ह र्षवर्धन (606 ई०–647 ई०) के काल में भारत आया था। ह्वेनसांग भारत में 630 ई० में आया और 644 ई० तक रहा। चीन लौटकर उसने 'पा चात्य संसार के लेख' (ी०यू०की०) नामक पुस्तक में अन्य विशयों के साथ ही तत्कालीन भारत की आर्थिक व्यवस्था की प्रगति पर भी विस्तृत ढंग से लिखा है। सम्राट ह र्षवर्धन के प चात् भारत की केन्द्रीय सत्ता छिन्न–भिन्न हो गयी तथा भारत में अनेक छोटे–बड़े राज्य स्थापित हो गये, इन राज्यों में परस्पर आपसी द्वेश के कारण भारत की राश्ट्रीय एकता को धक्का लगा, जिससे भारत की आर्थिक समृद्धि भी प्रभावित हुई। 11 वीं–12 वीं सदीं में भारत पर तुर्को का आक्रमण हुआ, तुर्की आक्रमण से भारत को राजनीतिक क्षति के साथ–साथ आर्थिक संकट का भी सामना करना पड़ा। डॉ० राजवली पाण्डेय के अनुसार जब तक भारत में भारतीयों का राज्य था, उनके उपनिवे ा बाहर विदे ाों में लहलहाते थे, परन्तु भारत में अपने मूल आधार नश्ट हो जाने पर वे सूखने लगें।

इतिहासकार अलबेरूनी का विवरण 11 वीं सदीं के भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण श्रोत है। अलबेरूनी का पूरा नाम अबुरेहान मोहम्मद इब्बन अहमद अथवा अलबेरूनी था। सुल्तान महमूद गजनवी के काल 1030 ई० में उसने अपनी पुस्तक किताबुल–हिंद अथवा तहकीक–ए–हिन्द की रचना की, इसमें उसने भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन का वर्णन किया।

16 वीं शाताब्दी में तुर्की साम्राज्य (दिल्ली सल्तनत) को अपदस्थ कर बाबर ने 1526 ई० में भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की। इस काल से सम्बन्धित एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है, ''बाबर के संस्मरण'' अथवा तुजुक–ए–बाबरी जिसमें दी गयी जानकारी की प्रमाणिकता असंदिग्ध हैं, इसमें बाबर ने हिन्दुस्तान की दौलत का भी बड़ा सजीव वर्णन किया है। बाबर लिखता है कि ''हिन्दुस्तान की प्रमुख वि ोशता यह है, कि यह एक वि ाल दे ा है और इसमें सोने–चाँदी का प्राचुर्य है। दूसरी अच्छी बात यह है कि हिन्दुस्तान में हर एक पे ो और व्यवसाय प्र ि ाक्षण, पिता से पुत्र की परम्परा में पीढ़ियों से चला आया है।

भारत में मुगल साम्राज्य के समय यहाँ की धन संपदा से आकर्शित होकर अनेक यूरोपियन व्यापरिक कंपनियो ने यहाँ प्रवे ा किया जिनमें पुर्तगाली, डच, डेनि ा, फ्रेन्च तथा अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी आदि प्रमुख थी। कालान्तर में इन सभी विदे ाी कम्पनियों के संघर्श का अन्त अंग्रेजो द्वारा भारतीय समुद्री व्यापार पर स्वामित्व हासिल करने और एक राजनीतिक भाक्ति के रूप में उभरने से हुआ। इस घटना के बाद भारत के साथ ब्रिटेन के आर्थिक सम्बन्धों का एक नया युग प्रारम्भ हुआ जिसमें भारत, औद्योगिक इंग्लैण्ड का एक उपनिवे ा बन गया। भारत पर राजनीतिक अधिकार के बाद अंग्रेजों ने भारत को अपना गुलाम दे ा बना लिया। भारत की सम्पत्ति और संसाधनो को अंग्रेज ब्रिटेन में भेज रहे थे और इसके बदले भारत को पर्याप्त आर्थिक लाभ नहीं मिल रहा था। यह आर्थिक दोहन ब्रिटि ा भाासन की खास व्यवस्था थी। दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक ''पावर्टी एण्ड अन–ब्रिटि ा रूल इन इंडिया'' में ब्रिटि ा भाासन की आर्थिक कुर्रीतियों का वर्णन किया है। दादा भाई ने धन की निकासी को ''अनिश्टो के अनिश्ट'' की संज्ञा दी।

निष्कर्ष

उपरोक्त भाोध पत्र के विस्तृत विवरण से स्पश्ट है कि प्राचीन काल से आधुनिक काल (भारतीय स्वतंत्रता काल 1947 ई०) तक भारत ने उत्तरोत्तर आर्थिक विकास किया परन्तु अंग्रेजो द्वारा भारतीय आर्थिक सम्पन्नता के दोहन द्वारा सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत को आर्थिक विपन्नता की कगार पर जा बड़ा किया। भाोध पत्र का गहन अध्ययन करने पर यह स्पश्ट रूप से दृश्टिगोचर होता है कि भारतीय समृद्धि के दोहन का प्रमुख कारण आपसी फूट व विदे ि ायों की गुलामी रही है।

*Corresponding Author: डॉ अमन चंद्र

संदर्भ ग्रन्थ टिप्पणी

(1) झा, द्रिजेन्द्र नारायण एवं श्रीमाली, कृ ण मोहन : प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदे ालय, दिल्ली वि वविद्यालय (1981)
(2) दुबे, सत्यनारायण : प्राचीन भारत का इतिहास, ि ावलाल अग्रवाल एण्ड कं०, अस्पताल मार्ग, आगरा–3
(3) मुखर्जी, राधाकुमुद : द इकानांमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, 1600–1800, इलाहाबाद (1967)
(4) वर्मा, रमे ा चन्द्र : भारतीय संस्कृति
(5) वर्मा हरि चन्द्र : मध्यकालीन भारत, भाग –1 व भाग–2, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदे ालय, दिल्ली वि वविद्यालय (1993)
(6) विपिन चन्द्र : राइज एंड ग्रोथ ऑफ इकोनांमिक ने ानलिज्म इन इंडिया (इकोनांमिक) पालिसीज ऑफ इंडियन ने ानल लीडरि ाप (1881–1915), नई दिल्ली (1966)
(7) सती ा चंद्र : उत्तरकालीन मुगल भारत, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदे ालय, नई दिल्ली
(8) श्रीवास्तव, आ ीवादी लाल : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति : ि ावलाल अग्रवाल एण्ड कं०, अस्पताल मार्ग, आगरा–3
(9) श्रीवास्तव, कृ णचन्द : प्राचीन भारत, केसवानी प्रेस, 391, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद (2003)
(10) दादाभाई नौरोजी : पावर्टी एंड अन–ब्रिटि ा रूल इन इंडिया, लंदन (1901)
(11) मुखर्जी, राधाकुमुद : द इकानांमिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया